कलाम

KALAM ACADEMY, SIKAR

3rd Grade Test Series-2025 L-1 Minor - 01 [Revised ANSWER KEY] HELD ON : 11/08/2025

Q.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
Ans.	4	3	4	2	2	4	2	1	4	3	1	2	2	2	3	1	3	2	1	3
Q.	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**	**31**	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
Ans.	2	4	4	4	3	2	2	2	3	3	4	1	3	2	3	2	4	4	1	2
Q.	**41**	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**	**51**	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
Ans.	1	2	3	1	1	1	2	2	4	3	1	4	3	4	3	1	4	1	3	2
Q.	**61**	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**	**71**	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
Ans.	1	2	3	2	3	4	2	2	1	3	2	4	2	1	2	2	3	3	2	3
Q.	**81**	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**	**91**	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
Ans.	2	2	3	3	4	4	1	1	2	3	2	3	4	1	4	4	1	4	4	4
Q.	**101**	**102**	**103**	**104**	**105**	**106**	**107**	**108**	**109**	**110**	**111**	**112**	**113**	**114**	**115**	**116**	**117**	**118**	**119**	**120**
Ans.	2	3	2	3	4	4	3	4	4	2	2	1	2	4	2	2	1	1	1	3
Q.	**121**	**122**	**123**	**124**	**125**	**126**	**127**	**128**	**129**	**130**	**131**	**132**	**133**	**134**	**135**	**136**	**137**	**138**	**139**	**140**
Ans.	3	2	2	2	3	2	3	3	2	4	3	1	4	*	2	4	1	3	2	4
Q.	**141**	**142**	**143**	**144**	**145**	**146**	**147**	**148**	**149**	**150**										
Ans.	1	3	3	1	3	4	3	1	3	1										

–:: Solution ::–

1. **Ans. 4**

व्याख्या :

- राजस्थान में स्थित विभिन्न स्थलाकृतियों का उत्तर से दक्षिण की ओर व्यवस्थित क्रम –

नाली– उत्तरी राजस्थान में गंगानगर व हनुमानगढ़ में घग्घर नदी का क्षेत्र

धरियन – पश्चिमी राजस्थान में स्थानांतरणशील बालुका स्तूप

ऊपरमाल– दक्षिणी पूर्वी राजस्थान में स्थित पठारी क्षेत्र

भोमट– दक्षिणी राजस्थान में डूंगरपुर-उदयपुर का क्षेत्र

2. **Ans. 3**

व्याख्या :

- बनास बेसिन अधिकांशत: टोंक जिले में विस्तरित है।
- अरावली पर्वत श्रेणी तथा चम्बल बेसिन के बीच का भाग बनास-बाणगंगा बेसिन के नाम से जाना जाता है।
- इस मैदान का सबसे उत्तरी भाग जिसमें जयपुर से भरतपुर तक का क्षेत्र शामिल है, वह बाणगंगा बेसिन के अन्तर्गत आता है।
- बनास बेसिन को दो उपभागों में बाँटा गया है– **मालपुरा करौली का मैदान तथा मेवाड़ का मैदान**

3. **Ans. 4**

व्याख्या :

- **खटखट दर्रा बूँदी जिलें में स्थित है।**
- **अरावली के प्रमुख दर्रे–**
- **अजमेर के दर्रे (मध्य अरावली के प्रमुख दर्रे)–**

(i) **बर्र दर्रा–** अजमेर को पाली से जोड़ता है।

(ii) **पखेरिया/परवेरिया–** अजमेर को मसूदा से जोड़ता है।

(iii) **शिवपुरा व सूरा घाट–** अजमेर को राजसमन्द से जोड़ता है।

(iv) **अन्य दर्रे–** देबारी, कचबाली व पीपली।

(i) **राजसमन्द–** कमली घाट, गोरम घाट, दिवेर, जीलवा/पगल्या नाल, हाथीगुढ़ा नाल।

(ii) **पाली–** सोमेश्वर की नाल, देसुरी नाल।

- **उदयपुर–** फुलवारी की नाल, केवड़ा नाल।

4. **Ans. 2**

व्याख्या :

- अरावली विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत श्रेणी है।
- उत्तर-पूर्वी मैदान गंगा – यमुना नदीयों द्वारा निर्मित मैदान का भाग है।
- पश्चिमी बालुका मैदान टेथिस सागर का अवशेष है।
- दक्षिणी पूर्वी पठार गौंडवाना लैण्ड का विस्तारित भाग है।

5. **Ans. 2**

व्याख्या :

- मुकुन्दरा पर्वत श्रेणी का सर्वोच्च शिखर चन्दवाड़ा क्षेत्र में स्थित है, जो 517 मीटर ऊँचा है।
- शाहबाद क्षेत्र – यह दक्षिणी पूर्वी पठार का उपभाग है।
- सतूर क्षेत्र – यह बूँदी की पहाड़ियों का सर्वोच्च शिखर है।

6. **Ans. 4**

व्याख्या :

(भू-आकृति प्रदेश)	(प्राकृतिक भूदृश्य)
♦ हाड़ौती पठार –	रामगढ़ क्रेटर
♦ मेवाड़ पहाड़ी प्रदेश –	लसाड़िया पठार
♦ मध्यवर्ती अरावली प्रदेश –	गोरमजी
♦ नागौर उच्च भूमि –	कुचामन-नावा झीलें

7. **Ans. 2**

व्याख्या :

- झालावाड़ पठार का उत्तरी-पश्चिमी भाग 'डग-गंगधार की उच्च भूमि' कहलाता है। यह झालावाड़ जिलें में स्थित है
- यह मालवा पठार का उत्तरी भाग है।
- यह पठार संभवत: 450 मीटर ऊँचाई का है।
- यह पठार सर्वत्र धरालीय एकरूपता नहीं रखता है।

8. **Ans. 1**

व्याख्या :

- **तारा स्तूप**– अनेक भुजाओं वाले तारे जैसी आकृति के स्तूप। उदाहरण– **मोहनगढ़ क्षेत्र (जैसलमेर-पोकरण) में एवं सूरतगढ़ क्षेत्र (गंगानगर) में।**

9. **Ans. 4**

व्याख्या :

- **बनास बेसिन को दो उपभागों में बाँटा गया है–**

(a) **मालपुरा करौली का मैदान–** यह बनास बेसिन का उत्तरी भाग है, जिसमें टोंक, सवाईमाधोपुर, करौली, दौसा आदि जिलों

का क्षेत्र आता है। हैरोन महोदय ने इस क्षेत्र की पहचान तृतीय पेनिप्लेन के रूप में की।

(b) मेवाड़ का मैदान- यह बनास बेसिन का दक्षिणी भाग है जिसमें राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा जिलों का क्षेत्र आता है।

- मेवाड़ के मैदान में देवगढ़ के निकट अरावली के पूर्वी भागों में **टीलेनुमा पीडमान्ट मैदान** है।

10. Ans. 3

व्याख्या :

♦ देलवाड़ा (सिरोही)	-	1442 मीटर
♦ ऋषिकेश (सिरोही)	-	1017 मीटर
♦ कमलनाथ (उदयपुर)	-	1001 मीटर

11. Ans. 1

व्याख्या :

♦ तारागढ़ चोटी, अजमेर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।

♦ रोजा भाखर, जालौर पर्वत का सर्वोच्च शिखर है।

♦ **जालौर की पहाड़ियाँ-** (i) डोरा पर्वत (869 मीटर), (ii) इसराना भाकर (839 मीटर), (iii) रोजा भाकर (730 मीटर), (iv) झारोला (588 मीटर)

♦ परवेरिया तथा सूराघाट, मध्य अरावली के प्रमुख दर्रे हैं।

12. Ans. 2

व्याख्या :

♦ उत्तरी अरावली से संबंधित शिखर समूह सिरावास (अलवर) बबाई (झुंझुनूं) है।

♦ लीलागढ़ व काटड़ा (दक्षिणी अरावली)- उदयपुर में

♦ सायरा व कमलनाथ (दक्षिणी अरावली)- उदयपुर में

♦ धोनिया-डूँगर व ऋषिकेश (दक्षिणी अरावली)- राजसमंद-उदयपुर में

13. Ans. 2

व्याख्या :

♦ घोड़े की नाल की आकृति वाली रामगढ़ पहाड़ी राजस्थान में शाहबाद की उच्च भूमि में एक विशिष्ट भू-आकृति रामगढ़ ग्राम के निकट **घोड़े की नाल (होर्श शू)** की आकृति की पर्वत श्रेणी है।

14. Ans. 2

व्याख्या :

♦ उड़िया पठार, आबू पर्वत से 160 मीटर ऊँचा है।

♦ भोराट पठार, उदयपुर के उत्तर-पश्चिम में स्थित है।

♦ पोतवार पठार, उत्तरी पूर्वी अरावली में स्थित है।

15. Ans. 3

व्याख्या :

♦ राजस्थान 'बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश' में सम्मिलित है

♦ जैसलमेर के चारों ओर का 65 किमी. क्षेत्र, **पोकरण (जैसलमेर)**, **फलौदी (जोधपुर)** का क्षेत्र बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश में आता है।

16. Ans. 1

व्याख्या :

♦ 'बूँदी पर्वत श्रेणी' का सर्वोच्च शिखर है

♦ इनका सर्वोच्च शिखर सतूर 353 मीटर ऊँचा है, जो बूँदी नगर से 13 किमी. पश्चिम में है।

17. Ans. 3

व्याख्या :

♦ ढांड - मरुस्थलीय प्रदेश में अस्थायी झील

♦ इन्सेलबर्ग - अवशिष्ट पहाड़ियाँ

♦ **रेग - मिश्रित मरुस्थल**

♦ नेबखा - झाड़ियों के सहारे निर्मित बालुका-स्तूप

18. Ans. 2

व्याख्या :

♦ 'मेवल' है-

♦ डूँगरपुर व बाँसवाड़ा के मध्य पर्वतीय क्षेत्र

19. Ans. 1

व्याख्या :

♦ **महान सीमा भ्रंश (GBT)-** अरावली तथा दक्षिणी-पूर्वी पठार के मध्य। हाड़ौती पठारी प्रदेश के उत्तरी-पश्चिमी सीमान्त पर स्थित भ्रंश। यह भ्रंश **धौलपुर, सवाईमाधोपुर, बूँदी, चित्तौड़गढ़ (बेंगू), उत्तरी कोटा** आदि जिलों में फैला हुआ है।

20. Ans. 3

व्याख्या :

♦ पूर्वी मैदानी प्रदेश में चम्बल नदी का अपवाह क्षेत्र अत्यधिक अवनालिका अपरदन (Gully erosion) के कारण उबड़-खाबड़ हो

कलाम ACADEMY

गया है, जिसे **उत्खात स्थलाकृति** (Badland Topography) या **बीहड़** (Ravines) या **डांग क्षेत्र/कन्दरा भूमि** के नाम से जाना जाता है, जो कृषि के लिए अयोग्य होती है। ये **कोटा से बूंदी, बाराँ, टोंक, सवाईमाधोपुर, धौलपुर** तक फैले हुए हैं।

21. Ans. 2

व्याख्या :

- राजस्थान में स्थित पठारों के पूर्व से पश्चिम की ओर व्यवस्थित क्रम –
- **हाड़ौती, ऊपरमाल, लसाड़िया, भोराट, आबू**

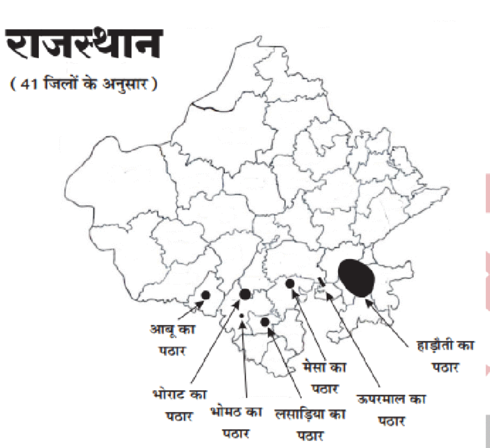

22. Ans. 4

व्याख्या :

- **हमादा मरुस्थलीय** प्रदेश की शैलें जुरासिक, क्रिटेशियस व इओसीन भूगर्भिक काल की हैं।

23. Ans. 4

व्याख्या :

दक्षिणी पूर्वी पठार को निम्नलिखित उपभागों में विभाजित किया गया है –

1. अर्द्धचन्द्राकार पर्वत श्रेणियाँ
2. नदी निर्मित मैदान
3. शाहबाद का उच्च स्थल
4. झालावाड़ा का पठार
5. डग-गंगधार के उच्च क्षेत्र

- देवगढ़ का पीडमाण्ट मैदान बनास बाणगंगा बेसिन के उपभाग मेवाड़ के मैदान का हिस्सा है।

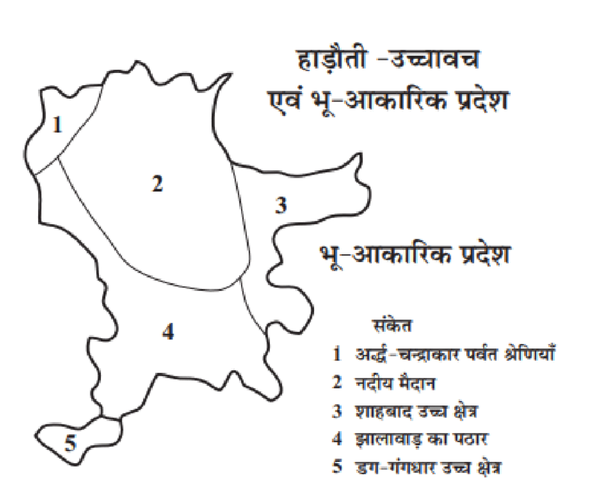

24. Ans. 4

व्याख्या :

- **अवरोधी बालूका स्तूप**- किसी अवरोध के कारण (पेड़, झाड़ी, पर्वत, भवन) उत्पन्न जमाव से निर्मित। इन बालूका स्तूपों को जीवावशेष बालूक स्तूप माना जाता है। जैसे- पुष्कर, नाग पहाड़, बूढ़ा पुष्कर, बिचून पहाड़, जोबनेर एवं सीकर की पहाड़ियों में मिलते हैं।

25. Ans. 3

व्याख्या :

- **विन्ध्यन कगार**- ये **चूना पत्थर व बलुआ पत्थर** से निर्मित हैं, जिनका मुख बनास व चम्बल के बीच दक्षिण-पूर्व व पूर्व की ओर है।

26. Ans. 2

- डोरा पर्वत (869 मीटर) जालौर की पहाड़ियों के अन्तर्गत आता है।
- लूनी बेसिन-नेहड़- जालौर जिले के साँचौर में स्थित।
- शेखावाटी प्रदेश-जोहड़ जल संरक्षण तकनीक।
- घग्घर मैदान-नाली (गंगानगर, हनुमानगढ़)

27. Ans. 2

व्याख्या :

- **मेवाड़ का मैदान**- यह बनास बेसिन का दक्षिणी भाग है जिसमें राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा जिलों का क्षेत्र आता है।
- यह प्रदेश भू-आकृतिक रूप से विविधता युक्त है।
- इस प्रदेश को प्रतापगढ़-बाँसवाड़ा में छप्पन का मैदान नाम से जाना जाता है।

- इस मैदान में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियाँ बनास, बाणगंगा, माही, सोम, जाखम व चम्बल आदि हैं।

28. Ans. 2

व्याख्या :

- **जोधपुर** के बाप क्षेत्र में पाई जाने वाले **बाप बोल्डर्स** पर हिमानी घर्षण के अवशेष हैं। जो कार्बोनिफेरस-पर्मियन (25-30 करोड़ वर्ष पूर्व) काल के हैं।

29. Ans. 3

व्याख्या :

- डोरा पर्वत - जालौर
- कमली घाट - राजसमंद
- हर्ष की पहाड़ियाँ - सीकर
- हाथी नाल - उदयपुर

30. Ans. 3

व्याख्या :

- अरावली विश्व की **प्राचीनतम वलित पर्वत श्रेणी** है, जिसमें **प्री कैम्ब्रियन** (प्री पेल्योजोइक) काल की चट्टानें पाई जाती हैं, मुख्य श्रेणी कठोर **क्वार्टजाइट** की बनी हुई हैं जो अपरदन के लिए काफी कठोर हैं।

31. Ans. 4

व्याख्या :

- **काली मिट्टी का निर्माण लावा के दरारी उद्गार (दक्कन ट्रैप)** से हुआ है, इसे मध्यम काली मृदा भी कहते हैं।
- **विस्तार क्षेत्र**- राजस्थान के **दक्षिणी-पूर्वी पठारी भाग** (कोटा, बूँदी, बारां व झालावाड़) में मिलती है।

32. Ans. 1

व्याख्या :

- **विस्तार**- राजसमन्द, पाली, उदयपुर, सलूम्बर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, सिरोही, झालावाड़, जयपुर, दौसा, अलवर, सवाईमाधोपुर।

33. Ans. 3

व्याख्या :

- रेवेरिना - गंगानगर
- जिप्सीफेरस - बीकानेर
- **सी-रोजेम - श्रीगंगानगर**
- स्लेटी भूरी - जालौर, पाली

34. Ans. 2

व्याख्या :

- **मिश्रित लाल व काली मिट्टी** में चूना, नाइट्रोजन, फास्फोरस व जैविक पदार्थों की कमी होती है तथा लौहा ऑक्साइड, पोटाश पर्याप्त मात्रा में होता है।
- इस मिट्टी में चीका की अधिकता होती है। अर्थात् कण बारीक होते हैं।

35. Ans. 3

व्याख्या :

- कैल्सी ब्राउन मृदा - जैसलमेर, बीकानेर
- नवीन भूरी मृदा - भीलवाड़ा, ब्यावर एवं अजमेर
- **पर्वतीय मृदा - उदयपुर, सलुम्बर एवं कोटा**
- लाल दुमट - डुंगरपुर, बांसवाड़ा

36. Ans. 2

व्याख्या :

मिट्टी के प्रकार	जलवायु प्रदेश
♦ एरिडोसोल्स	- शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क
♦ इनसेप्टीसोल्स	- अर्द्ध-शुष्क एवं आर्द्र
♦ अल्फीसोल्स	- उप-आर्द्र एवं आर्द्र
♦ वर्टीसोल्स	- आर्द्र एवं अति-आर्द्र

37. Ans. 4

व्याख्या :

- **वर्टीसॉल** - उस्टर्टस (पेल्युस्टर्टस, क्रोमस्टर्टस)

मृदा	मृदा उपसमूह
एरिडोसोल	• कैम्बो ऑरथिड्स • केल्सी ऑरथिड्स • पेलि ऑरथिड्स • सेल ऑरथिड्स
एंटीसॉल	• सामेन्ट्स- टोरीसामेन्ट्स • फ्लूवेन्ट्स- टोरीफ्लूवेन्ट्स • उस्टीफ्लूवेन्ट्स
अल्फीसॉल	• हेप्लुस्तालफस
इन्सेप्टीसॉल	• उस्टोक्रेप्ट्स
वर्टीसॉल	• उस्टर्टस (पेल्युस्टर्टस, क्रोमस्टर्टस)

38. Ans. 4

व्याख्या :

- लवणीयता, सेम/जलाक्रान्ता की समस्या, क्षारीयता, मृदा अवकर्षण, मृदा अपरदन

39. Ans. 1

व्याख्या :

- **मरूस्थली मिट्टी (रेतीली मृदा)** पश्चिमी राजस्थान में शुष्क जलवायु वाले भागों में पाई जाती है।
- इस मिट्टी का निर्माण भौतिक अपक्षय व अधिक तापान्तर से हुआ है।
- यह मृदा राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्र पर विस्तृत है।
- यह मिट्टी कम उपजाऊ व लवणीय होती है।
- इस मृदा pH मान उच्च होता है तथा इसमें जैविक पदार्थों की कमी पाई जाती है।
- यह मिट्टी पवनों द्वारा स्थानान्तरित होती रहती है।
- इस मिट्टी के कणों का आकार अत्यधिक बड़ा होता है तथा इसकी जल धारण क्षमता कम व जल अवशोषण क्षमता अधिक होती है।

40. Ans. 2

व्याख्या :

- काली मृदा को रेगुर मृदा/स्वत: जुताई वाली मृदा के नाम से भी जाना जाता है। इसमें सूखने पर दरारे पड़ जाती हैं।

41. Ans. 1

व्याख्या :

- एरिडोसोल मृदा राज्य में सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र पर फैली हुई है।
- एरिडोसोल मृदा की पश्चिमी राजस्थान में प्रधानता है।
- एंटीसॉल राजस्थान में दूसरी सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई मृदा है।

42. Ans. 2

व्याख्या :

भूरी रेतीली कच्छारी मिट्टी

- यह मिट्टी राजस्थान के अलवर, भरतपुर के उत्तरी भाग और गंगानगर जिले के मध्य भाग में पाई जाती है।
- इस मिट्टी में बाजारा, ज्वार, तिल, ईसबगोल, गेहूँ, सरसों, जौ आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है।
- इस मिट्टी का रंग लाल व भूरा होता है।
- इस मिट्टी में चूना, फॉस्फोरस व ह्यूमस की कमी होती है।

43. Ans. 3

व्याख्या :

- **सेम/जलाक्रान्ता की समस्या**- अत्यधिक सिंचाई के कारण भूमि का दलदली/अति संतृप्त होना।
- **विस्तार**- हनुमानगढ़ (बड़ोपल), श्रीगंगानगर का नहर सिंचित क्षेत्र।

44. Ans. 1

व्याख्या :

- लाल-पीली मृदा में चीका व दोमट दोनों प्रकार की मृदा मिलती है।
- **विस्तार क्षेत्र**- सवाईमाधोपुर, सिरोही, राजसमन्द, पाली, अजमेर, उदयपुर व भीलवाड़ा के पश्चिमी भाग में पाई जाती है।

45. Ans. 1

व्याख्या :

- रेतीली और बलुई दोमट मृदा, राजस्थान के कितने भू-भाग पर विस्तृत लगभग दो तिहाई भाग पर है।

46. (1)

व्याख्या :

आत्मानुभूति प्रेरक (Self-Actualisation Motive) :

आत्मानुभूति/स्व-यथार्थीकरण आवश्यकताओं का उच्चतम स्तर है जो व्यक्ति के उच्चतम लक्ष्यों की प्राप्ति और वास्तविक पहचान से संबंधित है। मैस्लो के शब्दों में एक व्यक्ति जो हो सकता है उसे वही होना चाहिए। यह जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति है जो सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, आध्यात्मिक किसी भी रूप में हो सकती है।

47. (2)

व्याख्या :

चालना/अंतर्नोद (Drive) :

अंतर्नोद/प्रणोद तनाव अथवा क्रियाशीलता की अवस्था को कहा जाता है जो किसी आवश्यकता द्वारा उत्पन्न होता है। अर्थात् आवश्यकता अंतर्नोद को जन्म देती है। प्रेरक में दो चीजों का समावेश

होता है- बल या अंतर्नोद और व्यवहार की लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होने की प्रवृत्ति।
जब प्रणोद के फलस्वरूप व्यक्ति का व्यवहार लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होता है तो ऐसे व्यवहार को प्रेरित व्यवहार कहते हैं।

48. **(2)**

व्याख्या :

- प्रेरणा छात्र की रूचि को बढ़ाती है किन्तु अवधान निर्माण में सहयोगी है।

49. **(4)**

व्याख्या :

प्रत्याशा सिद्धांत (Expectancy Theory)-

- इस सिद्धांत का प्रतिपादन सन् 1964 में येल प्रबंधन विश्वविद्यालय के विक्टर व्रूम ने किया।
- इस सिद्धांत के अनुसार किसी अभिप्रेरित व्यवहार की तीव्रता इस बात पर निर्भर करती है कि उसे परिणामस्वरूप क्या प्राप्त होगा(outcome reward)।

50. **(3)**

व्याख्या :

- **वुडवर्थ :** निष्पत्ति = योग्यता + अभिप्रेरणा

51. **(1)**

व्याख्या :

स्किनरः-

- शिक्षा-मनोविज्ञान का आरम्भ अरस्तू के समय से माना जा सकता है पर शिक्षा-मनोविज्ञान के विज्ञान की उत्पत्ति यूरोप में पेस्टॉलॉजी, हरबार्ट और फ्रॉबेल के कार्यो से हुई, जिन्होंने शिक्षा का मनोवैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया।

52. **(4)**

व्याख्या :

- **सैन्ट्रोक** के अनुसार, "शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शैक्षिक परिस्थितियों में शिक्षण एवं अधिगम के बोध में विभिन्नता दिखलाता है।"

53. **(3)**

व्याख्या :

व्यवहारवाद (Behaviourism)-

- प्रवर्तक - जे.बी. वॉटसन,
- मनोविज्ञान की विषयवस्तु प्रेक्षणीय व्यवहार का अध्ययन हैं।
- मनोविज्ञान वस्तुनिष्ठ व प्रयोगात्मक विज्ञान हैं।
- प्रेक्षण, अनुबंधन, परीक्षण, शाब्दिक रिपोर्ट

54. **(4)**

व्याख्या :

- शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की अनुप्रयुक्त शाखा हैं।
- यह शैक्षिक समस्याओं का हल मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं विधियों का प्रयोग करके करता हैं।
- यह एक वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक विज्ञान हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान एक सामाजिक विज्ञान हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान एक नियामक विज्ञान नहीं हैं।

55. **(3)**

व्याख्या :

आंतरिक अभिप्रेरण	बाह्य अभिप्रेरण
1. इसका स्रोत मनुष्य के भीतर होता है।	1. इसका स्रोत कोई बाहरी तत्व होता है।
2. ऐसे अभिप्रेरण को प्रत्यक्ष रूप से बाहर से देखा नहीं जा सकता।	2. ऐसे अभिप्रेरण को बाहर से देखा जा सकता है।
3. यह व्यक्ति को कार्य केन्द्रित रखता है।	3. यह व्यक्ति को लक्ष्य केन्द्रित रखता है।
4. उपलब्धि की आवश्यकता, संबंधन की आवश्यकता, आकांक्षा स्तर आंतरिक अभिप्रेरण के कुछ उदाहरण हैं।	4. पुरस्कार, दण्ड, धन, दोषारोपण, प्रतिद्वन्द्विता, परिणाम का ज्ञान, प्रशंसा आदि बाह्य अभिप्रेरण के उदाहरण है।

56. **(1)**

व्याख्या :

शक्ति अभिप्रेरक (Power Motive) :

दूसरों के संवेग या व्यवहार पर चेतन या अचेतन रूप से इच्छित प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता को सामाजिक सत्ता की संज्ञा दी जाती है। शक्ति अभिप्रेरक के विभिन्न लक्ष्य हैं – प्रभाव डालना, नियंत्रण करना, सम्मत करना, नेतृत्व करना, दूसरों को मोहित कर लेना, दूसरों की दृष्टि में अपनी प्रतिष्ठा को ऊँचा उठाना आदि।

डेविड मैक्लीलैंड ने इसकी अभिव्यक्ति में चार सामान्य तरीके बताए हैं –

1. बाहरी स्रोत का उपयोग करना
2. भीतरी स्रोत का निर्माण करना
3. व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करना
4. संगठन के सदस्य के रूप में दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए कार्य करना।

57. **(4)**

व्याख्या :

- अध्यापक को शिक्षण विधियों तथा सामग्रियों के उचित चयन का ज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा होता है जिससे वह शिक्षण की उचित व्यवस्था कर सकें।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों का, अधिगम की क्रिया के सम्बन्ध में मार्गदर्शन करता है।
- बालक में होने वाले व्यावहारिक परिवर्तन का मूल्यांकन करने में शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को सहायता प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को बालक की प्रकृति, स्वभाव तथा आवश्यकताओं आदि का ज्ञान प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को शिक्षा के उद्देश्यों को समझने में सहायता करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को वह ज्ञान प्रदान करता है, जिससे वह बालक की समस्याओं का पता लगा सके और उसका हल भी बता सके।

58. **(1)**

व्याख्या :

शिक्षा मनोवैज्ञानिक अर्थ एवं प्रकृति-

- यह शैक्षिक समस्याओं का हल मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं विधियों का प्रयोग करके करता हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। इस विषय का प्रयोग व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं सामूहिक व्यवहार के अध्ययन और विश्लेषण करने में किया जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान विभिन्न मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान संकलित किये गये ज्ञान को सैद्धान्तिक स्वरूप प्रदान करता हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान ने एक सिद्धान्त का विकास किया है, जिससे ज्ञान की खोज की जाती है, परिकल्पनाओं का परीक्षण होता है तथा सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता हैं।
- यह पद्धति अपने आप उत्पन्न होने वाली शैक्षिक समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने में सहायक होती हैं।
- ये सूचनाएँ, ज्ञान, सिद्धान्त और पद्धति सभी मिलकर शिक्षा- मनोविज्ञान का विषय बनते हैं और शैक्षिक सिद्धान्त तथा शैक्षिक व्यवहार को आधार प्रदान करते हैं।

59. **(3)**

व्याख्या :

- कोई भी अभिप्रेरक पूर्णत: जैविक अथवा मनो-सामाजिक नहीं होता। यह व्यक्ति में विभिन्न मिश्रणों में उद्दीप्त होते हैं।
- मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभिप्रेरकों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है – जैविक एवं मनो-सामाजिक।

60. **(2)**

व्याख्या :

कलाम ACADEMY

संरचनावाद (Structuralism) –

- प्रवर्तक – विलहेतम वुण्ट व ब्रेडफॉर्ड टिचनर
- 1879 ईस्वी में लिपिजिंग शहर में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना।
- मनोविज्ञान की विषयवस्तु चेतना का अध्ययन है।
- इस सन्दर्भ में विलियम जेम्स ने 1890 में प्रकाशित अपनी पुस्तक Principles of Psychology में उल्लेख किया।
- एक विषय जो चेतना की अवस्था का अपने उसी रूप में वर्णन और व्याख्या करता है।

61. **Ans. 1**

व्याख्या :

- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा जयपुर जिले की **दूदू तहसील स्थित बिचून ग्राम** से 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े' का शुभारंभ किया गया।
- राज्य सरकार द्वारा इस पखवाड़े का आयोजन **24 जून से 9 जुलाई 2025** तक किया गया।
- इस पखवाड़े का उद्देश्य समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक जनकल्याणकारी योजनाओं की पहुँच सुनिश्चित करना है।

62. **Ans. 2**

व्याख्या :

- अरावली ग्रीन वाल परियोजना देश के चार राज्यों के 29 जिलों में 700 किमी. लम्बाई में विस्तृत (सर्वाधिक 81 प्रतिशत विस्तार राजस्थान में है) अरावली के आस-पास के 5 किमी. बफर क्षेत्र में वनों से पुन: भरने हेतु चलाई जा रही है।
- इस परियोजना का विस्तार राजस्थान के 19 जिलों (उदयपुर, सिरोही, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, झुन्झुनूं, अलवर, जयपुर, अजमेर, पाली, नागौर, सीकर, दौसा, भरतपुर, करौली, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, राजसमंद) में है। (सर्वाधिक विस्तार उदयपुर तथा सबसे कम विस्तार भरतपुर में)

63. **Ans. 3**

व्याख्या :

- 4 जून, 2025 को राजस्थान के दो स्थलों **मेनार** व **खींचन** को अन्तरराष्ट्रीय रामसर साइट्स की सूची में सम्मिलित किया गया।
- <u>**मेनार:-**</u>
  - मेनार व खेरोदा, उदयपुर (राजस्थान) स्थित एक मीठे पानी का मानसूनी वेटलैण्ड कॉम्पलेक्स है जो तीन तालाबों ब्रह्मा तालाब, ढांड तालाब व खोरोदा तालाब तथा दो अन्य तालाबों को जोड़ने वाली कृषि भूमि से मिलकरबना है।
  - इस साइट का कुल क्षेत्रफल 463.4 हैक्टयेर है। (रामसर साइट क्रमांक = 2567)
  - **मेनार को 'बर्ड विलेज' के नाम से भी जाना जाता है।** यहाँ मानसूनी मौसम के दौरान कृषि भूमि में पानी भर जाता है, जिसके कारण यहाँ लगभग 110 प्रजातियों के जल पक्षियों का आगमन होता है। (67 प्रवासी प्रजाति)

64. **Ans. 2**

व्याख्या :

- राजस्थान राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े द्वारा राज्य के पुलिस महानिदेशक उत्कल रंजन साहू को राजस्थान लोक सेवा आयोग का नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इन्होंने 12 जून, 2025 को कार्यभार संभाला, इस पद हेतु इनका कार्यकाल 19 जून, 2026 तक रहेगा।
- ये आरपीएससी के **40वें अध्यक्ष** के रूप में नियुक्त हुए हैं।

65. **Ans. 3**

- युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय व खेलो इण्डिया द्वारा 'खेलो इण्डिया युनिवर्सिटी गेम्स' के **5वें** संस्करण की मेजबानी राजस्थान को सौंपी गई है।
- इन खेलों की मेजबानी राजस्थान को पहली बार सौंपी गई हैं।
- ये खेल नवम्बर-2025 में पूर्णिमा विश्वविद्यालय (मेजबान) और राजस्थान विश्वविद्यालय (सह-मेजबान) द्वारा संयुक्त रूप से जयपुर में आयोजित किए जायेंगे।

66. **Ans. 4**

व्याख्या :

कलाम ACADEMY

- झालाना व आमगढ़ के बाद **बीड़ पापड़** में जयपुर की तीसरी लेपर्ड सफारी शुरू की गई है।
- 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री भजनलाल ने वर्चुअल रूप से इसका शुभारंभ किया।

नोट- जयपुर लॉयन, टाइगर तथा 3 लेपर्ड सफारी वाला देश का इकलौता जिला है।

67. **Ans. 2**

व्याख्या :

- राजस्थानी भाषा के लिए **वर्ष 2025** का **बाल साहित्य पुरस्कार भोगीलाल पाटीदार** को उनकी पुस्तक "पखेरूवन नी पीरा (नाटक)" के लिए प्रदान किया गया।

  पुरस्कार:- विशेष बॉक्स में ताम्र पत्रिका व 50 हजार रूपये की राशि
- वर्ष 2025 के राजस्थानी भाषा के बाल साहित्य पुरस्कार के चयन हेतु गठित जूरी में निम्न तीन सदस्य थे-

  (1) प्रो. कल्याण सिंह शेखावत

  (2) डॉ. नवज्योत भनोट

  (3) श्रीमति दमयन्ती जादावत

68. **Ans. 2**

व्याख्या :

- 28 मई से 6 जून तक चांगवोन (दक्षिण कोरिया) में आयोजित वर्ल्ड शूटिंग पैरा स्पोर्ट्स (WSPS) वर्ल्ड कप-2025 में **रूद्रांश खण्डेलवाल** ने P1-मेन्स 10 मीटर एयर पिस्टल (SH1) की **व्यक्तिगत स्पर्द्धा** में मनीष नरवाल को हराकर स्वर्ण पदक जीता। इस हेतु इनका **स्कोर 236.3** अंक रहा।

69. **Ans. 1**

व्याख्या :

- केन्द्र सरकार ने गजट नॉटिफिकेशन जारी किया है जिसके तहत पान मैथी (नागौरी पान मैथी) को जून-2025 में स्पाइसेस बोर्ड भारत (भारतीय मसाला बोर्ड) ने आधिकारिक रूप से 53वें मसाले के रूप में अधिसूचित किया है।

70. **Ans. 3**

व्याख्या :

- 26 जून को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मारवाड़ इंटरनेशनल सेंटर, जोधपुर में "**विधायक-शिक्षा का साथी**" तथा "**मातृ वन योजना**" का शुभारंभ किया।
- इन योजनाओं का नवाचार जोधपुर शहर विधायक श्री अतुल भंसाली द्वारा किया गया है।
- 'विधायक-शिक्षा का साथी योजना' के माध्यम से जोधपुर शहर के चयनित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सर्वश्रेष्ठ शिक्षा के अवसर उपलब्ध करवाए जायेंगे।
- मातृ वन योजना के अंतर्गत जोधपुर के वन क्षेत्र में 5 लाख पौधे लगाए जायेंगे।

71. **Ans. 2**

व्याख्या :

- ♦ जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया में राजस्थानी भाषा का पहला वैज्ञानिक विभाजन प्रस्तुत किया तथा राजस्थानी भाषा के लिए सर्वप्रथम राजस्थानी शब्द का प्रयोग किया।

72. **Ans. 4**

व्याख्या :

- ♦ गौड़वाड़ी बोली मुख्यतया जालौर व सिरोही के कुछ क्षेत्रों में बोली जाती है।

73. **Ans. 2**

व्याख्या :

- ♦ वागड़ी बोली वागड़ क्षेत्र (डूंगरपुर-बांसवाड़ा)में बोली जाती है।
- ♦ हाड़ौती बोली मुख्यतया कोटा, बारां, बूंदी तथा झालावाड़ में बोली जाती है।
- ♦ मालवी बोली मालवा प्रदेश से जुड़े राजस्थान के क्षेत्रों झालावाड़, कोटा व प्रतापगढ़ के कुछ भाग में बोली जाती है।

74. **Ans. 1**

व्याख्या :

कलाम ACADEMY

♦ **रांगड़ी बोली** – ये बोली मालवा के राजपूतों में प्रचलित थी तथा अपनी कर्कशता के लिये जानी जाती है जो कि मालवी की एक उपबोली है।

75. Ans. 2

व्याख्या :

♦ पूर्वी राजस्थानी अर्थात् ढूंढाड़ी के उपबोलियों में चौरासी, अजमेरी, किशनगढ़ी, नागरचोल, काठेड़ी, राजावाटी, सिपाड़ी आदि प्रमुख है।

76. Ans. 2

व्याख्या :

♦ ICAR के कृषि एप्लीकेशन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के अन्तर्गत 66 कृषि विज्ञान केन्द्र है जिनमें 1 दिल्ली में, 18 हरियाणा में तथा 47 राजस्थान में है। ये विभिन्न संस्थाओं के प्रशासनिक नियंत्रण में है जिनमें से कुछ NGO के नियंत्रण में है जैसे–

♦ संगरिया हनुमानगढ़ – ग्रामोत्थान विद्यापीठ

♦ सरदारशहर, चुरू – गांधी विद्या मंदिर

♦ बड़गाँव, उदयपुर – विद्याभवन सोसाइटी

♦ वनस्थली विद्यापीठ, टोंक – वनस्थली विद्यापीठ

77. Ans. 3

व्याख्या :

♦ राज्य में 9 पशुधन अनुसंधान स्टेशन है जो कि निम्न है–

♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, नोहर (हनुमानगढ़)

♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, बीछवाल (बीकानेर)

♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, बीकानेर

♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, कोडमदेसर (बीकानेर)

♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, चाँदन (जैसलमेर)

♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, वल्लभनगर (उदयपुर)

♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, डग (झालावाड़)

♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, सरमथुरा (धौलपुर)

नोट– केशवाना, जालौर में कृषि अनुसंधान स्टेशन है।

78. Ans. 3

व्याख्या :

♦ राज्य में स्थित कृषि अनुसंधान स्टेशन व उनसे संबंधित कृषि जलवायु प्रदेश निम्न है–

अनुसंधान स्टेशन	संबंधित कृषि जलवायु प्रदेश
• मंडोर (जोधपुर)	1A
• गंगानगर	IB
• बीकानेर	1C
• फतेहपुर (सीकर)	IIA
• केशवाना (जालौर)	IIB
• दुर्गापुरा (जयपुर)	IIIA
• नवगाँव (अलवर)	IIIB
• उदयपुर	IVA
• उम्मेदगंज, कोटा	V

इस प्रकार नवगाँव, अलवर का कृषि अनुसंधान स्टेशन IIIB कृषि जलवायु प्रदेश से संबंधित है।

79. Ans. 2

व्याख्या :

♦ **वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (CSIR)** की एक घटक प्रयोगशाला सीरी, पिलानी की स्थापना वर्ष 1950 में हुई जब CSIR के प्रणेता डॉ. शांति स्वरूप भटनागर ने इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान को समर्पित अनुसंधान और विकास संस्थान की स्थापना हेतु वित्तीय सहायता के लिए जी.डी. बिड़ला से संपर्क किया।

♦ **21 सितंबर 1953** में जवाहरलाल नेहरू द्वारा पिलानी (झुन्झुनूँ) में इसकी आधारशिला रखी।

80. Ans. 3

व्याख्या :

♦ शुष्क क्षेत्र में बागवानी फसलों की क्षमता को साकार करने और लोगों के लिए पोषण और आय सुरक्षा को प्राप्त करने की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्** के कृषि अनुसंधान और शिक्षा पर कार्य समूह की सिफारिश पर भारतीय योजना आयोग के अनुमोदन के बाद

कलाम ACADEMY

सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान राष्ट्रीय शुष्क बागवानी अनुसंधान केन्द्र (NRCAH) की स्थापना की गई थी।

♦ **27 सितंबर 2000** से इसे संस्थान का दर्जा दिया गया और इसका नाम केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर रखा गया।

81. Ans. 2

व्याख्या :

● **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्** के द्वारा केन्द्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान की स्थापना **1962 में मालपुरा (टोंक)** में की गई जो कि अब अविकानगर के नाम से लोकप्रिय है।

82. Ans. 2

व्याख्या :

♦ केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का एक घटक है जोकि जोधपुर में स्थित है।

♦ इस संस्थान की स्थापना 1952 में रेत की टीलों के स्थिरीकरण और आश्रय पट्टियों की स्थापना के माध्यम से वायु अपरदन के खतरों को नियंत्रित करने के लिए अनुसंधान कार्य हेतु **मरुस्थलीय वनरोपण अनुसंधान केन्द्र (DARS)** के रूप में हुई।

♦ 1966 में इस संस्थान को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधीन कर दिया गया।

♦ यह देश का एकमात्र ऐसा संस्थान है जिसे शुष्क क्षेत्र पारिस्थितिकी तंत्र के मुद्दों पर विशेष रूप से अनुसंधान करने का अधिकार है।

♦ इस प्रकार प्रश्न में असत्य कथन केवल B है क्योंकि केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान की **1952** में मरूस्थलीय वनरोपण अनुसंधान केन्द्र के रूप में स्थापना की गई।

83. Ans. 3

व्याख्या :

♦ ICAR के अधीन राजस्थान में 3 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँ संचालित है जो निम्नानुसार है-

♦ अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँ-

(i) मोती बाजरा पर जोधपुर में

(ii) सरसों व राई पर भरतपुर में

(iii) शुष्क क्षेत्र फलों पर बीकानेर में

84. Ans. 3

व्याख्या :

♦ केन्द्रीय कृषि फार्म जैतसर, श्रीगंगानगर की स्थापना 1962 में कनाड़ा के सहयोग से की गई। जबकि केन्द्रीय राज्य फार्म/ केन्द्रीय कृषि फार्म, सुरतगढ़ की स्थापना 1956 में रूस के सहयोग से की गई जो कि एशिया का सबसे बड़ा कृषि फार्म है।

85. Ans. 4

व्याख्या :

♦ चौपासनी जोधपुर में राजस्थानी शोध संस्थान है जिसकी स्थापना 1955 में हुई तथा-

♦ सामाजिक कार्य शोध केन्द्र - तिलोनिया, अजमेर

♦ रूपायन शोध संस्थान - बोरून्दा, जोधपुर

♦ हस्तशिल्प डिजाइन विकास एवं शोध केन्द्र - जयपुर में है।

86. Ans. 4

व्याख्या :

♦ केन्द्रीय पशुधन/मवेशी प्रजनन फार्म, सुरतगढ़, श्रीगंगानगर की स्थापना 1967 में हुई जो कि थारपारकर नस्ल हेतु प्रसिद्ध है।

♦ जबकि केन्द्रीय झुंड पंजीकरण युनिट, अजमेर गिर व मुर्रा नस्ल हेतु प्रसिद्ध है।

88. Ans. 1

व्याख्या :

♦ यांत्रिक कृषि फार्म, कोटा की स्थापना 6 जून, 1978 को हुई।

88. Ans. 1

व्याख्या :

प्रश्न में अनुसंधान केन्द्र व संबंधित स्थानों की दो सूचियों का मिलान करवाया गया है जो निम्नानुसार है-

♦ शुष्क वन अनुसंधान केन्द्र - जोधपुर

♦ आयुर्वेद केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान - जयपुर

♦ राज्य भेड रोग अनुसंधान प्रयोगशाला - जोधपुर

♦ सिरेमिक विद्युत अनुसंधान एवं विकास केन्द्र - बीकानेर

कलाम ACADEMY

इस प्रकार प्रश्न में दिए गए स्थानों में से जोधपुर में 2 संस्थान थे जबकि चौथे विकल्प टोंक में प्रश्न में दिया गया कोई भी संस्थान नहीं है। टोंक में निम्न संस्थान है–

1. केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर
2. पश्चिमी क्षेत्रीय बकरी अनुसंधान केन्द्र, अविकानगर
3. मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी फारसी शोध संस्थान
4. भारतीय घास भूमि एवं चारा अनुसंधान संस्थान झाँसी का पश्चिमी क्षेत्र अनुसंधान केन्द्र अविकानगर

89. Ans. 2

व्याख्या :

♦ राजस्थान का राज्य खेल बास्केटबॉल है जिसे 1948 में राज्य खेल का दर्जा प्राप्त हुआ।

90. Ans. 3

व्याख्या :

♦ प्रश्न में राज्य प्रतीक तथा उनको अधिसूचित करने की दिनाँक की दो सूचियों का मिलान करवाया गया है जिनका सही मिलान निम्नानुसार है–

(A) पशु (पशुधन श्रेणी)	– ऊँट	– 19 सितंबर, 2014
(B) वृक्ष	– खेजडी	– 31 अक्टूबर, 1983
(C) फूल	– रोहिड़ा का फूल	– 31 अक्टूबर, 1983
(D) पशु (वन्यजीव श्रेणी)	– चिंकारा	– 12 दिसंबर, 1983

इस प्रकार राज्य वृक्ष व राज्य फूल को अधिसूचित करने की दिनाँक समान है जबकि प्रश्न में दी गई एक अन्य दिनाँक 21 मई 1982 को ग्रेट इंडियन बस्टर्ड/गोड़ावन को अधिसूचित किया गया था।

91. Ans. 2

व्याख्या :

राज्य प्रतीक व उनके वैज्ञानिक नाम निम्नानुसार है–

♦ राज्य पक्षी (गोड़ावन) – ओर्डियोटिस नाइग्रीसैप्स/कोरियटस नाइग्रीसैटस

♦ राज्य वृक्ष (खेजड़ी) – प्रोसेपिस सिनेरिया

♦ राज्य पशु (वन्यजीव श्रेणी–चिंकारा) – गजेला बन्नेट्टी/गजेला–गजेला

♦ राज्य पशु (पशुधन श्रेणी – ऊँट) – केमेलस डोमेडेरियस

♦ राज्य पुष्प (रोहिडा का फूल) – टिकोमेला अनड्यूलेटा

92. Ans. 3

व्याख्या :

♦ चिंकारा का वैज्ञानिक नाम गजेला बन्नेट्टी है जबकि इसकी भारतीय प्रजाति को गजेला गजेला नाम दिया गया है। यह मुख्यत: पश्चिमी राजस्थान/मरु क्षेत्र में पाया जाता है तथा राज्य में चिंकारा प्रजनन केन्द्र नाहरगढ़ अभयारण्य, जयपुर में है।

♦ इस प्रकार प्रश्न में दिए गए कथनों में से केवल C कथन ही सत्य है।

93. Ans. 4

व्याख्या :

♦ राज्य पक्षी गोड़ावन/ग्रेट इंडियन बस्टर्ड को 21 मई 1982 की अधिसूचना के माध्यम से राज्य पक्षी के रूप में अधिसूचित किया गया तथा इसी अधिसूचना में इसे वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के उपबंधों के अधीन पूर्णत: संरक्षित घोषित किया गया।

♦ इस प्रकार प्रश्न में दिए गए दोनों कथन सत्य है जबकि प्रश्न में असत्य कथनों का विवरण पूछा गया है। अत: विकल्प 4 (न तो A न ही B) उत्तर होगा

94. Ans. 1

व्याख्या :

♦ राज्य में स्थित 47 कृषि विज्ञान केन्द्रों में से 3 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों के प्रशासनिक नियंत्रण में है इनमें से ♦ जोधपुर व पाली – काजरी के नियंत्रण में तथा बानसुर, अलवर राई-सरसों अनुसंधान निदेशालय, सेवर के प्रशासनिक नियंत्रण में हैं।

♦ जबकि प्रश्न में दिए गए अन्य विकल्प कुम्हेर, भरतपुर; खेड़ला, खुर्द, दौसा व अरणिया, श्रीमाधोपुर (सीकर) श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के प्रशासनिक नियंत्रण में हैं।

95. Ans. 4

व्याख्या :

♦ कृषि अनुसंधान स्टेशन, मंडोर (जोधपुर) की स्थापना वर्ष 1983 में हुई वही कृषि अनुसंधान स्टेशन बीकानेर की 1997 में फतेहपुर (सीकर) की 1984 में तथा केशवाना (जालौर) की 1988 स्थापना हुई।

कलाम ACADEMY

96. Ans. 4

व्याख्या :

♦ एशिया का सबसे बड़ा कृषि फार्म – केन्द्रीय राज्य फार्म, सुरतगढ़ (श्रीगंगानगर) में है जिसकी स्थापना 15 अगस्त 1956 को रूस (तत्कालीन USSR) की सहायता से हुई। यह फार्म 29919 एकड़ क्षेत्र में विस्तृत है।

प्रश्न में दिए गए अन्य स्थानों में निम्नलिखित अनुसंधान केन्द्र है–

♦ तबीजी (अजमेर) – राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र

♦ दुर्गापुरा (जयपुर) – राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान

♦ मोहनगढ़ (जैसलमेर) – चारा बीज उत्पादन फार्म

97. Ans. 1

व्याख्या :

♦ राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान की स्थापना 1943 में दुर्गापुरा, जयपुर में की गई। इसके अधिकार क्षेत्र में अर्द्धशुष्क पूर्वी मैदानी क्षेत्र (III - A) कृषि जलवायु खण्ड आता है जिसमें जयपुर, अजमेर, दौसा, टोंक, खेरथल- तिजारा, कोटपुतली- बहरोड व आंशिक ब्यावर जिले शामिल है।

98. Ans. 4

व्याख्या :

♦ अरबी फारसी भाषा व साहित्य के विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा **दिसंबर 1978** में निदेशालय अरबी फारसी शोध संस्थान की स्थापना **टोंक** में की गई।

♦ **वर्ष** 1981 में इसका नाम परिवर्तित कर **मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी फारसी शोध संस्थान** रखा गया।

99. Ans. 4

व्याख्या :

♦ विभिन्न कृषि जलवायु स्थितियों में स्थान आधारित समस्या के अनुरूप अनुसंधान हेतु काजरी के पाँच क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र स्थित है–

1. पाली– लवणीय/सोडियम मिट्टी व जल का प्रबंधन, घास व पेड़ों के बीजों का उत्पादन।

2. बीकानेर– सिंचित और वर्षा आधारित उत्पादन प्रणालियों की जल उत्पादकता में वृद्धि।

3. जैसलमेर– वाणिज्यिक फसलों, अनाज और दालों में जल उत्पादकता में सुधार तथा इसके मुख्य क्षेत्र आर्थिक वनस्पति विज्ञान, पादप शरीर क्रिया विज्ञान, कृषि वानिकी, बागवानी है।

4. कुक्मा (भुज)– लवणीय मिट्टी और खराब गुणवत्ता वाले पानी का प्रबंधन।

5. लेह (लद्दाख)– ठंडे शुष्क क्षेत्रों के लिए क्षेत्र विशिष्ट कृषि पद्धतियों का विकास, प्राकृतिक संसाधनों और मरुस्थलीकरण की स्थिति पर जानकारी का भंडार।

100. Ans. 4

व्याख्या :

♦ राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र तबीजी, अजमेर में स्थित है जिसकी स्थापना ICAR के तत्त्वावधान में 22 अप्रैल 2000 को हुई।

प्रश्न में दिए गए अन्य विकल्पों में स्थित अनुसंधान केन्द्र निम्नानुसार है–

♦ सेवर (भरतपुर) – राई – सरसों अनुसंधान निदेशालय

♦ जोहडबीड़ (बीकानेर) – राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र (क्षेत्रीय स्टेशन)

♦ दुर्गापुरा (जयपुर) – राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान

101. Ans. 2

व्याख्या :

♦ केन्द्रीय झूंड पंजीकरण युनिट, अजमेर की स्थापना 2 अगस्त 1979 को हुई। यह गिर व मुर्रा नस्ल हेतु प्रसिद्ध है।

102. Ans. 3

व्याख्या :

♦ भारतीय रेल अनुसंधान एवं परीक्षण केन्द्र पचपदरा (बाड़मेर) में स्थित है।

103. Ans. 2

व्याख्या :

कलाम ACADEMY

♦ घूमर **भील जनजाति** का पारंपरिक लोक नृत्य है। जिसे वर्तमान में सभी समुदायों द्वारा किया जाता है। यह महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।

104. Ans. 3

व्याख्या :

♦ राजस्थान का राज्य वृक्ष खेजड़ी है जबकि राज्य पुष्प रोहिड़ा का फूल है।

105. Ans. 4

व्याख्या :

राज्य पक्षी गोड़ावन के संदर्भ कुछ तथ्य निम्नानुसार है-

♦ गोड़ावन हैचिंग सेंटर – रामदेवरा (जैसलमेर)

♦ गोड़ावन प्रजनन केन्द्र – जोधपुर जन्तुआलय

♦ राज्य में सर्वाधिक गोड़ावन – मरुद्यान (जैसलमेर, बाड़मेर); सोरसेन (बारां); सोंकलिया (अजमेर) में पाये जाते हैं।

106. Ans. 4

दिया है : $0.111..... = \frac{1}{9}$

तब $0.444......$

$= 4(0.1111......)$

$= 4 \times \frac{1}{9} = \frac{4}{9}$

107. Ans. 3

$\sqrt{27} = 3 \times \sqrt{3}$

नोट- $3 \times \sqrt{3}$ को परिमेय संख्या बनाने के लिए $\sqrt{3}$ से गुणा करना होगा। क्योंकि $3 \times \sqrt{3} \times \sqrt{3} = 9$

108. Ans. 4

$\left(\frac{1}{2} + \frac{1}{3}\right) = \frac{5}{6} = 0.833333..... = 0.8\overline{3}$

109. Ans. 4

वे धनात्मक पूर्णांक जिनमें स्वयं व एक के अलावा अन्य किसी संख्या का पूरा-पूरा भाग नहीं जाता हो, अभाज्य संख्याएँ /रूढ़ संख्याएँ कहलाती है। अर्थात् वह धनात्मक पूर्णांक जिनके केवल दो गुणनखण्ड हो, अभाज्य संख्याएँ कहलाती है।

संख्या	सर्वसम्भव गुणनखण्ड	भाज्य / अभाज्य
1	1	न तो भाज्य नही अभाज्य
2	1,2	अभाज्य
3	1, 3	अभाज्य
4	1,2,4	भाज्य
5	1,5	अभाज्य
6	1,2,3,6	भाज्य

- 1 न तो भाज्य हैं और न ही अभाज्य हैं। क्योंकि इसका केवल एक ही गुणनखण्ड होता है।
- छोटी से छोटी अभाज्य संख्या 2 है जो एकमात्र सम संख्या है।
- 3 सबसे छोटी विषम अभाज्य संख्या है।
- दो अंको की सबसे छोटी अभाज्य संख्या 11 है व सबसे बड़ी अभाज्य संख्या 97 है।
- तीन अंको की सबसे छोटी अभाज्य संख्या 101 है तथा सबसे बड़ी अभाज्य संख्या 997 है।
- 1 से 100 तक अभाज्य संख्याओं का वर्गीकरण –

1-25	1-50	1-75	1-100
9	15	21	25

110. यदि मानक रूप में लिखी गयी परिमेय संख्या के हर के अभाज्य गुणनखण्ड में 2 या 5 या दोनों अंकों के अतिरिक्त कोई अन्य अभाज्य गुणनखण्ड न हो, तो वह संख्या होती है?

(1) अशांत दशमलव

(2) शांत दशमलव

(3) शांत व अशांत दोनों

(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(5) अनुत्तरित प्रश्न

Solution:

- वह दशमलव संख्याएँ जिसमें दशमलव के पश्चात् निश्चित अंकों के बाद प्रसार समाप्त हो जाता है, शांत दशमलव संख्याएँ कहलाती हैं।
- इन्हें अन्त युक्त दशमलव संख्याएँ भी कहा जाता है।
- इसका हर सदैव $2^m \times 5^n$ रूप का होता है। अर्थात् शांत दशमलव संख्याओं का हर या तो 2 की घात के रूप में या 5 की घात के रूप में या 2 व 5 दोनों की घात के रूप में होता है।

कलाम ACADEMY

- सभी शांत दशलमव संख्याएँ सदैव परिमेय संख्याएँ होती हैं।

  जैसे- $\frac{1}{2} = 0.5$, $\frac{1}{8} = 0.125$

111. छः अंकों की सबसे छोटी संख्या ज्ञात करों जो कि 201 से पूर्ण भाज्य है-

(1) 100500

(2) 100098

(3) 100089

(4) 100299

(5) अनुत्तरित प्रश्न

Solution:

- छः अंकों की सबसे छोटी संख्या 100000 को 201 से विभाजित करने पर शेषफल 103 प्राप्त होता है जो दर्शाता है कि 100000, 201 से पूर्णतया विभाजित नहीं है। 100000 को 201 से पूर्णतया विभाजित करने के लिए शेषफल 103 को घटाकर या तो शून्य किया जाये या 103 को बढ़ाकर 201 किया जाये। घटाने पर संख्या 5 अंकों की हो जायेगी इसलिए हम घटाने की जगह शेषफल 103 में 98 जोड़कर 201 करेंगे। **अतः अभीष्ट संख्या 100000 + 98 = 100098 है।**

112. 100 के निकटतम अभाज्य संख्या है-

(1) 101 (2) 97

(3) 103 (4) 91

(5) अनुत्तरित प्रश्न

Solution:

- 100 से पहले संख्या 97 तथा 100 के बाद संख्या 101 अभाज्य संख्या है। हमें 100 के निकटतम अभाज्य संख्या पुछी गयी है अतः सही उत्तर 101 है।

113. 1 से 80 तक गिनती में कुल कितने अभाज्य युग्म है?

(1) 6 **(2) 8**

(3) 9 (4) 12

(5) अनुत्तरित प्रश्न

Solution:

अभाज्य युग्म-

- अभाज्य संख्याओं का एक ऐसा युग्म जिसमें दो का अन्तर हो अभाज्य युग्म कहलाता है।
- 1 से 80 तक गिनती में निम्न 8 अभाज्य युग्म विद्यमान है-

  (3, 5) (5, 7) (11, 13) (17, 19) (29, 31) (41, 43) (59, 61) (71, 73)

114. निम्न में से कौनसा युग्म सह अभाज्य है?

(1) 8, 10 (2) 5, 25

(3) 3, 15 **(4) 31, 33**

(5) अनुत्तरित प्रश्न

Solution:

सह अभाज्य संख्या –

- वह संख्यायें जिसका महत्तम समापर्वतक एक हो सह अभाज्य संख्या कहलाती है। अर्थात् (a, b) सह अभाज्य है तो HCF (म.स) = 1 तथा LCM (ल.स) = ab
- **नोट–** कोई भी दो क्रमागत संख्याएँ सदैव सह अभाज्य होती है अतः क्रमागत संख्याओं का म.स.1 होती है तथा LCM उनका गुणनफल होता है।

  जैसे :- (9,10) (101,102) (25,26)

115. Ans. 2

NCF-2005 के अनुसार सामाजिक विज्ञान के सम्बन्ध में सुझाव व महत्वपूर्ण तथ्य –

- पाठ्यक्रम निर्माण की केन्द्रीकृत प्रकृति की जगह विकेन्द्रीकृत पद्धति को अपनाया जाए।
- सामाजिक विज्ञान में वैज्ञानिक दृढता की बजाए वैज्ञानिक वैधता होनी चाहिए।
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य, विद्यार्थी में नैतिक, मानसिक व आलोचनात्मक ऊर्जा स्थापित करना है।
- सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु **भूगोल, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र** से ली जाती है।

कलाम ACADEMY

- ♦ सामाजिक विज्ञान, एक शांति मूलक व समता मूलक समाज का ज्ञान आधार तैयार करने के लिए आवश्यक है।

116. Ans. 2

बालक को समाज का ज्ञान देना भी सामाजिक विकास का एक उद्देश्य है परंतु बालक का सामाजीकरण करना, उसका प्रमुख उद्देश्य है

सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य –

1. उत्तम नागरिकता का विकास।
2. सामाजिक विरासत एवं संस्कृति का ज्ञान।
3. बालक का सामाजीकरण करना
4. विभिन्न वृत्तियों एवं कौशलों का विकास
5. अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास
6. आसपास के भौतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का ज्ञान।
7. छात्रों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास के साथ साथ उनका सर्वांगीण विकास।
8. राष्ट्रीय अखण्डता एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध का विकास।
9. अवकाश के समय का सदुपयोग।
10. सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों का विकास।
11. प्रजातांत्रिक गुणों का विकास।

117. Ans. 1

- **ई.बी. वेस्ले के अनुसार:-** ''सामाजिक अध्ययन नामक पद उन विद्यालय विषयों की ओर संकेत देता है जो मानवीय संबंधों का विवेचन करते हैं। यह विषयों के एक संघ तथा पाठ्यक्रम के एक खण्ड का निर्माण करता है, जो प्रत्यक्ष रूप से मानवीय संबंधों से संबंधित है।'' अर्थात् 'सामाजिक अध्ययन विभिन्न सामाजिक विषयों के आधारभूत तत्वों का अध्ययन है।'
- **जॉन यू. माइकेलिस के अनुसार** – ''सामाजिक अध्ययन, अतीत, वर्तमान तथा भविष्य में मनुष्य तथा उसके अपने सामाजिक एवं भौतिक वातावरण के प्रति की जाने वाली अंत:क्रियाओं से संबंधित है, जिसमें मानवीय संबंधों का अध्ययन किया जाता है।''
- **एम.पी. मुफात-** ''सामाजिक अध्ययन ज्ञान, सूचना तथा क्रियात्मक अनुभवों द्वारा युवाओं में प्रभावी नागरिकता के आधार के रूप में मूलभूत मूल्यों, वांछित आदतों, स्वीकृत वृत्तियों तथा महत्त्वपूर्ण कौशलों के निर्माण में सहायता प्रदान करता है।''

118. Ans. 1

सामाजिक अध्ययन की विशेषताएँ

- यह मानवीय संबंधों का अध्ययन है।
- यह समकालीन समाज का अध्ययन है।
- यह समाजिक क्रियाओं का अध्ययन है।
- इसमें इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीतिक शास्त्र, समाजशास्त्र आदि विषयों से विषय सामग्री ली जाती है।
- यह विभिन्न विषयों का योग मात्र न होकर उनका एकीकृत उपागम है।
- यह मनुष्य का सामाजिक एवं भौतिक वातावरण के साथ सम्बंधों का अध्ययन है।

119. Ans. 1

<u>NCF-2005 के अनुसार सामाजिक विज्ञान शिक्षण का महत्व-</u>

- सामाजिक विज्ञान का अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। यह बच्चों को इस योग्य बनाता है कि वे –
  - ♦ उस समाज को समझें जिसमें वे रहते हैं – यह सीखें कि समाज की संरचना, शासन एवं प्रबंध कैसे होता है। यह भी समझें कि कौन से बल समाज को अनेक तरीकों से बदलते हैं तथा अनुप्रेषित करते हैं।

कलाम ACADEMY

- भारतीय संविधान में प्रतिष्ठित मूल्यों, जैसे – न्याय, स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा, एकता और राष्ट्रीय एकीकरण से अवगत हों और एक समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के महत्व को समझ सकें।
- समाज के सक्रिय, जिम्मेदार और चिंतनशील सदस्य के रूप में बढ़ने में समर्थ हों।
- विविध मतों, जीवन शैलियों और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों का सम्मान करना सीखें।
- ग्रहण किए गए विचारों, संस्थाओं और परम्पराओं के संबंध में प्रश्न कर सकें और उनकी जाँच-पड़ताल कर सकें।
- उस आनंददायक पाठ्य सामग्री को पढ़कर आनंद प्राप्त करें जो उन्हें उपलब्ध कराई गई है।

120. Ans. 3

माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग, 1952-53) - मुदालियर आयोग ने सामाजिक अध्ययन शिक्षण को माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य रुप से पढ़ाये जाने की अनुशंसा की जो कि इतिहास, भूगोल व नागरिक शास्त्र का सम्मिश्रण ना होते हुए उनका ऐसा एकीकृत पूर्ण विषय होगा जो छात्रों को यह समझा सके कि समाज में अपना वर्तमान रूप किस प्रकार धारण किया है।

121. Ans. 3

नवीन अवधारणा: सामाजिक अध्ययन की नवीन अवधारणा को इस प्रकार समझा जा सकता है –
- आधुनिक सभ्यता को स्पष्ट करने वाला विषय
- शिक्षण के लिए नवीन आधार प्रदान करने वाला विषय
- शिक्षा का आधुनिक दृष्टिकोण
- क्षेत्रीय विषय के रूप में
- सामाजिक तथा भौतिक वातावरण का अध्ययन
- सामाजिक प्राणी के रूप में मानव का अध्ययन
- मानवीय संबंधों का अध्ययन
- मानव जीवन का अध्ययन

122. Ans. 2

संश्लेषण विधि :–
- यह भाषा शिक्षण की **तार्किक क्रम** की विधि है।
- इस विधि में सीखने का क्रम – **'वर्ण-शब्द-वाक्य'** होता है। अर्थात् यह वर्ग से वाक्यों की ओर चलती है।

123. Ans. 2

खण्डान्वय विधि (प्रश्नोत्तर प्रणाली) :-
- कविता की एक-एक पंक्ति व उसके एक-एक खण्ड पर प्रश्न पूछते हुए कविता का अर्थ बताने की विधि प्रश्नोत्तर अथवा खण्डान्वय विधि कहलाती है।
- यह विधि गद्य/कविता शिक्षण की प्रणाली की भाँति ही है, जिसमें पद्यांश के खण्ड करके प्रत्येक तथ्य, भाव या विचार के संबंध में प्रश्न पूछा जाता है और अभीष्ट उत्तर प्राप्त करते हुए संपूर्ण विषय वस्तु का परिचय छात्रों को करा दिया जाता है।

124. Ans. 2

व्यतिरेकी विधि –
- व्यतिरेक का अर्थ – **तुलना** होता है इसलिए इस विधि को **तुलनात्मक विधि** भी कहते हैं।
- इस विधि में मातृभाषा व द्वितीय भाषा दोनों के समान व असमान तत्त्वों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण करवाया जाता है।
- यह विधि मातृभाषा व द्वितीय भाषा दोनों का तुलनात्मक व वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

125. Ans. 3

आगमन विधि के सोपान/पद-

इस प्रणाली में निम्नांकित सोपानों अथवा पदों का अनुसरण किया जाता है-

(क) उदाहरण – प्रस्तुत प्रकरण से संबंधित अनेक उदाहरण छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

(ख) तुलना एवं विश्लेषण :- उन उदाहरणों की परस्पर तुलना करना, विश्लेषण करना और उनसे व्यक्त समान लक्षणों एवं विशेषताओं को समझना।

(ग) सामान्यीकरण/नियमीकरण/निष्कर्ष :- लक्षणों एवं विशेषताओं के आधार पर नियम, निष्कर्ष या परिभाषा निकालना

कलाम ACADEMY

(घ) प्रयोग और अभ्यास(परीक्षण) :- निकाले गए निष्कर्ष या नियम की पुष्टि के लिए अनेक प्रयोग करना और उनका अच्छी तरह से अभ्यास करना। इन्हीं अभ्यासों से नियम का परीक्षण किया जाता है।

126. Ans. 2

उत्तम रचना के गुण-

1. रचना की भाषा सरल, सुबोध तथा विषयानुकूल हो।
2. रचना में सभी भाव व विचार उचित क्रमानुसार व्यक्त हो।
3. रचना में शब्दों की वर्तनी व विराम चिह्नों का शुद्ध व सही प्रयोग हो।

रचना के रूप - रचना दो प्रकार से की जा सकती है-

1. मौखिक रचना 2. लिखित रचना

127. Ans. 3

व्याख्या विधि :-

- इस विधि में शिक्षक एक-एक पद को लेकर इसका अर्थ स्पष्ट करता हुआ कवि के दार्शनिक मत, रचना शैली, कविता में वर्णित परिस्थितियों, कविता की भाषा, भाव, अर्थ, प्रतीकों आदि की व्याख्या करके कविता का अर्थ स्पष्ट करता चलता है।
- यदि कविता में कोई **अन्त: कथा** हो तो उसका ज्ञान भी करा दिया जाता है। इससे छात्रों की कविता में रुचि बनी रहती है। छात्र स्वयं भावार्थ समझने का प्रयास करता है और शिक्षक द्वारा गूढ़ या जटिल अंशों से सम्बन्धित व्याख्या सुनकर ग्रहण भी कर लेता है।

128. Ans. 3

- अच्छे पद्य/कविता शिक्षण में भाव सौंदर्य, नाद सौंदर्य, कल्पना सौंदर्य, विचार सौंदर्य तथा भाषा शैली सौंदर्य का समावेश होता है।

(i) भाव सौंदर्य - विद्यार्थी कविता/पद्य के मर्मस्पर्शी स्थलों की भावानुभूति कर सके। (प्रेम, करूणा, क्रोध, उत्साह)

(ii) कल्पना सौंदर्य - कविता/पद्य ही वह साधन है जिससे कल्पना को मनमाना रूप प्रदान किया जा सकता है।

(iii) विचार सौंदर्य - पद्य के विचार सौंदर्य के अंतर्गत विद्यार्थी में नैतिकता के सौंदर्य का समावेश करना होता है।

(iv) नाद सौंदर्य - कविता/पद्य में शब्दों की ध्वनि का कलात्मक प्रयोग करना जिससे सुनने में आकर्षक व सुखद लगे।

(v) भाषाशैली सौंदर्य - कविता/पद्य का सृजन करने के लिए आवश्यक है कि कवि का भाषा पर अधिकार हो वह सुंदर शब्दों का चयन करे व उन्हें सही ढंग से व्यवस्थित करे।

129. Ans. 2

प्रत्यक्ष विधि :- अन्य नाम- **सुगम विधि, निर्बाध विधि, प्राकृतिक विधि, मातृ विधि।**

- इस विधि में बच्चों को द्वितीय भाषा उसी रूप में सिखाई जाती है, जिस रूप में वे अपनी मातृभाषा सीखते हैं अर्थात् द्वितीय भाषा सिखाने के लिए द्वितीय भाषा ही माध्यम रखा जाता है।
- इस विधि में **मातृभाषा का प्रयोग नहीं** किया जाता है।
- इस विधि में द्वितीय भाषा की शिक्षा वास्तविक परिस्थितयों में वार्तालाप से शुरु होती है अर्थात् मौखिक अभ्यास से दूसरी भाषा सिखाई जाती है।
- **व्याकरण के नियम पर बिना बल दिए ही वास्तविक परिस्थितियों में भाषा के व्यावहारिक रूपों को खोजकर सहज रूप से सिखाना प्रत्यक्ष विधि की विशेषता है।**

130. Ans. 4

(i) **लिखित रचना के रूप**

- पत्र एवं पपत्र
- **संवाद लेखन**
- जीवनी/आत्मकथा लेखन
- सारलेखन
- रिपोतार्ज लेखन (रिपोर्ट लेखन)
- विवरण लेखन
- संस्मरण लेखन
- वर्णन- स्थान, दृश्य घटना, क्रिया-कलाप आदि का।
- सृजनात्मक रचनाएं- कहानी, गद्य, एकांकी, कविता आदि।

(ii) **गद्य शिक्षण के सोपान :-**

- प्रमुखत: गद्य शिक्षण के तीन सोपान होते हैं- वाचन, व्याख्या, विचार विश्लेषण।

1. **वाचन** -

(i) सस्वर वाचन -

(a) आदर्श वाचन (b) अनुकरण वाचन

(ii) मौन वाचन -

(a) द्रुत मौन वाचन (b) गहन मौन वाचन

(iii) **व्याकरण शिक्षण की विधियाँ :-**

व्याकरण शिक्षण की निम्नलिखित विधियाँ प्रचलित हैं-

1. आगमन विधि-

(i) प्रयोग विधि (i) सहयोग प्रणाली

2. निगमन विधि/सिद्धांत प्रणाली -

(i) सूत्र प्रणाली (ii) पाठ्यपुस्तक प्रणाली

3. भाषा संसर्ग विधि/अव्याकृत विधि

4. आगमन-निगमन विधि

(iv) **रसास्वादान विधि-** यह कविता/पद्य के रसात्मक आनंद का अनुभव करने की विधि है।

131. Ans. 3

व्यास विधि :-

यह विधि व्याख्या विधि का ही विस्तृत/ विकसित रूप है। इसका नामकरण **कथावाचक व्यासों** के आधार पर किया गया है।

- इस विधि में **शिक्षक कथावाचक की भाँति** एक-एक पद्य स्पष्ट करते हुए अनेक उदाहरण, **अन्त: कथा** आदि का प्रयोग करता है।
- इस विधि में कविता को भाषा और भाव की दृष्टि से परखा जाता है।
- इसमें भाव के स्पष्टीकरण के लिए अनेक उदाहरणों, दृष्टान्तों, सूक्तियों तथा कथाओं का प्रयोग कर व्याख्या की जाती है।
- भाषा की दृष्टि से इसमें एक-एक शब्द, उसकी उपादेयता, शब्द बल, दोष तथा वाक्य-विन्यास आदि की दृष्टि से स्पष्टीकरण किया जाता है।
- इस विधि से पढ़ाने के लिए अध्यापक को विषय का गहन ज्ञान होना आवश्यक है।

132. Ans. 1

अर्थबोध विधि/अर्थकथन विधि :-

- सर्वाधिक प्रचलित विधि।
- यह गद्य शिक्षण की यह एक **परम्परागत विधि** है।
- इस विधि के अंतर्गत **शिक्षक हाथ में पुस्तक लेकर स्वयं वाचन करते हुए अर्थ स्पष्ट करता जाता है।** इस विधि में कठिन शब्दों का अर्थ बताकर सभी वाक्यों का सरलार्थ बताते हुए गद्यांश का अर्थ स्पष्ट कर देता है।
- इस विधि में सारा कार्य शिक्षक ही करता है तथा छात्र निष्क्रिय होकर श्रोता बनकर बैठे रहते हैं। इससे बालकों को अपनी बुद्धि का उपयोग करने का अवसर नहीं मिलता।

133. Ans. 4

डाल्टन प्रणाली -

प्रतिपादक - मिस हेलन पार्कहस्ट

आयुवर्ग- 8 वर्ष से अधिक आयु वाले बालकों के लिए उपयोगी।

स्तर- माध्यमिक स्तर

- किंडर गार्टन एवं माण्टेसरी प्रणालियाँ शिशु शिक्षण प्रणालियाँ हैं पर डाल्टन प्रणाली का प्रयोग **8 वर्ष से अधिक आयु** वाले बालकों के लिए किया गया है।
- इस प्रणाली के प्रमुख सिद्धांत हैं- बालकेन्द्रित शिक्षा, व्यक्तिगत शिक्षा एवं स्वाध्याय पर बल, अध्ययन एवं शैक्षिक प्रगति की स्वतन्त्रता, शिक्षक द्वारा उचित पथ प्रदर्शन। इन विशेषताओं के कारण इसे **'स्वाध्याय विधि'** भी कहते हैं।
- डाल्टन प्रणाली **कक्षा-प्रणाली की जगह स्वाध्याय प्रणाली पर बल** देती है। कक्षा प्रणाली में बालक के वैयक्तिक विकास की उपेक्षा होती है। अत: भाषा की शिक्षा में भी बालक की **वैयक्तिक विभिन्नता** को ध्यान में रखना आवश्यक है।

134. इस प्रश्न में लिपीकीय त्रुटि से असत्य कथन के स्थान पर सत्य कथन लिखा गया है। अत: इस प्रश्न को डिलीट किया जाता है।

पाठ्यपुस्तक प्रणाली :-

- पाठ्यपुस्तक प्रणाली अंग्रेजी से हिन्दी में आई।
- इस विधि के अंतर्गत व्याकरण शिक्षण का आधार एक पुस्तक होती है। इसमें पाठ्यपुस्तक की सहायता से नियमों को रटाया जाता है एवं उदाहरणों से अभ्यास कराया जाता है।
- इस विधि द्वारा भाषा की मूल ध्वनियों व लिपि का ज्ञान कराकर (रटाकर) विद्यार्थी को पढ़ने लिखने के कौशल में दक्ष किया जाता है।
- पाठ्यपुस्तक प्रणाली को **सिताराम चतुर्वेदी** विकृत रूप में **'सुग्गा प्रणाली'** (तोता रटन प्रणाली) भी कहा जाता है।
- यह प्रणाली भी अमनोवैज्ञानिक तथा अरुचिकर है।

कलाम ACADEMY

135. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- जातिवाचक संज्ञा - जीभ, भूकम्प, तालाब।
- भारत, रामायण (व्यक्तिवाचक संज्ञा), नौकर (जातिवाचक संज्ञा)
- जयपुर (व्यक्तिवाचक संज्ञा), पर्वत, शिक्षक (जातिवाचक संज्ञा)
- गंगा (व्यक्तिवाचक संज्ञा), बिजली (जातिवाचक संज्ञा), उमंग (भाववाचक संज्ञा)

136. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- जातिवाचक संज्ञा + प्रत्यय = भाववाचक संज्ञा
- गुरु + अ = गौरव

विशेषण + प्रत्यय = भाववाचक संज्ञा

- सुजन + य = सौजन्य
- दक्ष + ता = दक्षता
- काला + इमा = कालिमा

137. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- भाववाचक संज्ञाएँ - जालिम (विशेषण) = जुल्म, दुर्बल + य = दौर्बल्य, मीठा + आस = मिठास।
- गरीबी (भाववाचक संज्ञा), भक्त, माता (जातिवाचक संज्ञा)
- सूर्य (व्यक्तिवाचक संज्ञा), होशियारी (भाववाचक संज्ञा), दानव (जातिवाचक संज्ञा)
- शेर (जातिवाचक संज्ञा), ऊपर (अव्यय), घुमाव (भाववाचक संज्ञा)

138. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- यदि **आप** शब्द का प्रयोग (तू/तुम) के आदर रूप में प्रयुक्त होता है तथा अंग्रेजी रूपान्तरण में इसके लिए 'you' शब्द का प्रयोग किया जा सकता है, तो वहाँ यह मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम माना जाता है। जैसे - **आप** पधारकर अनुगृहीत करें।

139. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- मुझे घर जाना है। (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम)

140. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- पशु शब्द से बनने वाला विशेषण पाशविक है।
- पशुत्व, पशुता (भाववाचक संज्ञा)
- पशुपति - पशु का पति अर्थात् शिव (बहुव्रीहि समास)

141. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- मौलिक, कुलीन, गांगेय (विशेषण)
- माधुर्य (भाववाचक संज्ञा)

142. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम - वे सर्वनाम शब्द जो सुनने वाले के नाम के स्थान पर प्रयुक्त किये जाते हैं।
- तू, तुम, आप

143. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- 'A dark horse' का मतलब होता है- एक ऐसा प्रतिद्वंद्वी जिसके बारे में हम नहीं जानते।
- 'A hidden competitor' इस अर्थ के अनुसार विकल्प 3 सही उत्तर है।

144. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- 'Give a cold shoulder' का अर्थ है कि किसी को जानबूझकर अनदेखा (Avoid/ignore) करना।

145. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- 'Leaps and bounds' का अर्थ है- तेज गति से किसी स्थिति या कार्य में उन्नति होना।

146. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- यदि **school, college, church, temple, hospital, prison, university, bed** आदि का प्रयोग उनके निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाए तो इनके पहले the का प्रयोग नहीं किया जाता है लेकिन अन्य किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाए तो इनके पहले the का प्रयोग किया जाता है। (If school, college, church, temple, hospital, prison, university, bed, etc. are used for their intended purpose, then the is not used before them, but if they are used for any other purpose, then they are preceeded by 'The')

147. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- जब कोई adjective, noun का काम करें (When an adjective acts as a noun)

  The rich should not exploit the poor.

  We should not laugh at **the handicapped**.

  Note : The + Adj. एक Plural noun का function करती है।

148. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- मूल्य, गति, दोहराव आदि के भावों से पहले (प्रति की जगह जैसे - 2 रूपये प्रति किलो, एक दिन में 6 बार) (Before expressions of price, speed, repetitions, etc.)

  two rupees a kilo, six times a day,

  80 rupees a dozen, 20 kms an hour, etc.

149. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- दिशाओं, मंत्रालयों तथा वाद्य यंत्रों के पहले जैसे (As before directions, ministries and musical instruments)

  The North of Rajasthan,

  The Ministry of Defence

  The flute.

  Note : Musical Instrument को Play करते समय 'the' का प्रयोग किया जाता है। अन्य किसी अर्थ में नहीं।

  He can play **the guitar.**

  I wish I had **a guitar** now.

150. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- देशों के Plural name होने पर 'The' का प्रयोग किया जाता है।

  The USA.

  The UK.

  The UAE.

- लेकिन दिये गये वाक्य में U.S.A. का प्रयोग एक adjective की तरह किया गया है व article का प्रयोग इसके बाद प्रयुक्त हुई noun- 'Company' के लिए किया जायेगा।
- क्योंकि 'Company' एक singular व indefinite (अनिश्चित) noun है, इसलिए यहाँ 'A' का प्रयोग उचित होगा।

कलाम ACADEMY